ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–९९
दिनांक- मंगलवार, २८ दिसम्बर, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 23.2 एवं 10.6 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 94 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 64 प्रतिशत, हवा की औसत गति 2.3 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.1 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 1.6 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 13.9 एवं दोपहर में 22.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(29 दिसम्बर, 2021–02 जनवरी, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 29 दिसम्बर, 2021–02 जनवरी, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के तराई एवं मैदानी जिलों में आसमान में गरज वाले हल्के से मध्यम बादल बन सकते है। पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से अगले २४–४८ घंटों में अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा होने की संभावना है। कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा भी सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 18 से 22 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 8 से 9 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। २६ दिसंबर से तापमान में गिरावट के कारण कहीं–कहीं कोल्ड डे (Cold Day) की स्थिति बन सकती है तथा रात एवं सुबह के समय में मध्यम से घने कुहासे छा सकते है।
- पूर्वानुमानित अवधि में अगले दो दिनों तक पूरवा हवा उसके बाद पछिया हवा चलने का अनुमान है। औसतन 9–12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 65 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- अगले २४-४८ घंटों में हल्की वर्षा की संभावना को देखते हुए कृषि कार्य जैसे कीटनाषक दवाओं के छिड़काव आदि में सर्तकता बरतने की आवष्यकता है। किसान भाई खड़ी फसलों में सिंचाई मौसम देख कर ही करे।
- पूर्वानुमानित अवधि में आलू की फसल में बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी होने के कारण व्यापक रूप से झुलसा का प्रकोप हो सकता है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। पत्ती पर भुरे रंग के जलीय धब्बे बनते है। कभी-कभी भुरे व काले घब्बे तने पर दिखाई देते है जिससे कंद भी प्रभावित होते है। इस रोग के लक्षण दिखने पर डाई-इथेन एम० ३४ फफूंदनाषक दवा का २ किलोग्राम १००० लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से २-३ छिड़काव १० दिनों के अन्तराल पर करें। आलू में कजरा पिल्लू दिखने पर फसल में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० का २.५ लीटर १००० लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। दोनों दवाओं को मिलाकर किसान भाई छिड़काव कर सकते है। पिछात आलू में प्रति हेक्टेयर ७५ किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेषन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो २१ से २५ दिनों की हों गयी हो ३० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई रबी मक्का की फसल जो ५० से ६० दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में ५० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें। मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में फोरेट १० जी० या कार्बोफ्यूरान ३ जी० का ७-८ दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन २५०-३०० मि०ली० प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- खड़ी रबी फसलों जैसे-आलू, गाजर, मटर, टमाटर, धनियाँ, लहसून में कृषक भाई झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी होने पर यह बीमारी फसलों में काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर २.५ ग्राम डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर २-३ छिड़काव १० दिनों के अन्तराल पर करें।
- पिछात मटर में निकाई-गुराई करें। फसल में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियाँ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। १५-२० टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास २५ ई० सी० या नोवाल्युरॉन १० ई० सी० का १ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- सर्दी के मौसम से दुधारु पशुओं को १ किलो ग्राम अतिरिक्त दाना मिश्रण दे एंव साफ ताजा पानी जिसका तापमान १५-२० डिग्री सेल्सियस हो पिलाए। दाना मिश्रण में तिलहन अनाज एंव खल्ली की मात्रा बढ़ा दें। पशु बाड़े के फर्श को सूखा रखें। बाछड़-बछड़ियों को रात के समय बंद कमरें में रखें एंव पुवाल का बिछावन दें। बच्चों में सफेद दस्त एंव निमोनिया के लक्षण आने पर तुरन्त पशु चिकित्सक के परामर्श से इलाज कराए।
- बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ इ०सी०/ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव करे।

आज का अधिकतम तापमानः 23.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.5 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 9.4 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.4 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी